शोषित जनता का प्यारा सपूत, गढ़चिरोली संघर्ष का जुझारू नेता और दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य

कामरेड श्रीकांत (हरक) को लाल-लाल सलाम!

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

शोषित जनता का प्यारा सपूत, गढ़चिरोली संघर्ष का जुझारू नेता और दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य

कामरेड श्रीकांत (हरक) को लाल–लाल सलाम!

लम्बी बीमारी के बाद, 26 फरवरी 2012 को दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य कामरेड श्रीकांत का निधन हुआ। वह करीब 48 साल के थे। वह पिछले 14 सालों से गढ़चिरोली जिले में क्रांतिकारी आंदोलन का प्रत्यक्ष नेतृत्व कर रहे थे। 2004 में उन्हें पहली बार सीने में दर्द हुआ था। डाक्टरी जांच से पता चला था कि उन्हें दिल के हल्के दौरे पड़ चुके थे। बाद में उन्होंने नियमित रूप से दवाइयां लेना शुरू किया। उसके बाद उन्हें गुरिल्ला जोन की कठिन परिस्थितियों और भीषण शत्रु दमन के चलते नियमित जांच करवाने का मौका नहीं मिल पाया। पर्याप्त आराम और अन्य सुविधाएं भी नहीं मिल सकीं। वह एक जुझारू कामरेड थे जिन्होंने अपनी अस्वस्थता की जरा भी परवाह न करते हुए क्रांतिकारी गतिविधियों में नियमित रूप से भाग लिया। 2011 के बीच से उनके स्वास्थ्य में काफी गिरावट आई। शत्रु दमन के चलते इलाज और दवाइयां मिलने में देरी हुई। हालांकि उन्हें बचाने के लिए पार्टी नेतृत्व और पीएलजीए के कामरेडों ने पूरी कोशिश की लेकिन बचा नहीं सके। अपने सभी साथियों और गढ़चिरोली की संघर्षशील जनता को शोक में डुबोते हुए वह हमसे हमेशा के लिए विदा ले गए। आइए, इस जुझारू और बहादुर जनयोद्धा के जीवन के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर नजर डाली जाए।

लौह मिट्टी में खिला बचपन

कामरेड श्रीकांत को घर में माता–पिता ने 'हरक' का नाम दिया था। लेकिन उनके दोस्त और परिचित लोग उन्हें प्यार से 'गुण्डू' या 'गुण्डू भैया' के नाम से पुकारते थे। दरअसल वह इसी नाम से ज्यादा लोकप्रिय थे। उनका परिवार उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले का है। उनके पिताजी 1960 के दशक में आजीविका के लिए पलायन करके दल्ली राजहरा आ बसे थे। छत्तीसगढ़ के दुर्ग (अब बालोद) जिले में स्थित दल्ली राजहरा लौह अयस्क खदान के चलते बसा हुआ कस्बा है, जहां से भिलाई स्टील प्लांट के लिए लोहे की आपूर्ति होती है। हालांकि कामरेड हरक का जन्म उत्तर प्रदेश में ही हुआ था, लेकिन उनका सारा बचपन दल्ली राजहरा की लाल मिट्टी में कूदते–खेलते हुए ही गुजरा। उनका परिवार जब यहां आया था उस समय वह तीन साल का रहा होगा।

श्रीकांत का बचपन दल्ली राजहरा की झोंपड़पट्टियों में बीता।

उस समय भिलाई स्टील प्लांट लौह अयस्क निकालने का काम ठेकेदारों से करवाता था। ठेकेदारों में पंजाबियों का बोलबाला था। खदान मजदूरों में ज्यादातर उत्तर प्रदेशी, बिहारी, तेलुगु, केरली व बंगाली थे – इनमें से बंगाली व केरलियन अच्छे ओहदे में थे। बीएसपी के स्थाई कर्मचारियों में बंगाली और केरलियन ज्यादा थे। विभिन्न किस्म के लोगों के बीच रहने से कामरेड श्रीकांत को फायदा हुआ। बचपन से ही उनकी कल्पनाओं और सोच का दायरा व्यापक होने लगा। दल्ली में ठेकेदारों द्वारा बेरोकटोक शोषण चलता था। श्रम का शोषण ही नहीं, शारीरिक उत्पीड़न भी चरम पर था। खदानों में काम करने वाले ठेका मजदूरों में महिलाओं की तादाद भी कम नहीं थी। महिला मजदूरों पर यौन अत्याचार आम बात थी। एक बार एक ठेकेदार के द्वारा एक महिला मजदूर पर अत्याचार करके सरे बाजार पेड़ पर फांसी देकर लटकाया गया था। और यह चेतावनी भी दी गई थी कि जो कोई भी लाश को नीचे उतारेगा उसे काट दिया जायेगा। सैकड़ों महिला–पुरुष मजदूर वहां इकट्ठा हुए थे तमाशबीन बनकर। वो हिम्मत जुटाने में आगे पीछे हो रहे थे। भीड़ में से एक साधारण मजदूर ने लाश को नीचे उतारा। और मजदूरों में आक्रोश व उत्तेजना बढ़ गई। गगनभेदी नारों के साथ लाश को लेकर मजदूरों ने जुलूस निकाला। बालक श्रीकांत पर इस घटना ने अमिट छाप छोड़ी। शोषण व अत्याचार के खिलाफ मजदूरों में भड़की आग ने श्रीकांत को लड़ाकू प्रेरणा दी। बाद में जब भी दल्ली राजहरा आंदोलन की चर्चा होती थी, कामरेड श्रीकांत उस घटना की याद किये बगैर नहीं रह सकते थे।

नौजवानी में मजदूर आंदोलनों के साथ बढ़ाए कदम

1977 में मजदूरी बढ़ाने के लिए खदान के ठेका मजदूरों ने हड़ताल की थी। बच्चे, बूढ़े समेत तमाम राजहरावासी सड़कों पर उतर गये थे। संयुक्त खदान मजदूर संघ, जोकि संशोधनवादी सीपीआई का मजदूर संगठन है, की अगुवाई में चले इस आंदोलन को नेतृत्व ने बीच मझधार में छोड़कर प्रबंधन के साथ समझौता कर लिया था। लेकिन मजदूरों को वह समझौता मंजूर नहीं था। बिना संगठन के ही मजदूरों ने अपने आंदोलन को उग्र बनाया था। प्रबंधन ने पुलिस के साथ सांठगांठ करके मजदूरों पर फायरिंग कराई। इसमें तीन खदान मजदूरों ने अपनी जान गंवाईं। आंदोलन शांत नहीं हुआ बल्कि और उग्र हुआ। अपने शहीद साथियों की लाशें लेकर दूसरे दिन उससे भी बड़ा प्रदर्शन शुरू किया। पुलिस ने दोबारा फायरिंग की। इस फायरिंग में आठ मजदूरों की जानें गईं। दल्ली की लाल मिट्टी और लाल हो गई।

नौजवान श्रीकांत को इस घटना ने झकझोर दिया। लड़ाई के सिवाए कोई चारा नहीं, यह उनके दिमाग में बैठ गया। इस आंदोलन से छत्तीसगढ़ माइन्स श्रमिक संघ के रूप में एक जुझारू मजदूर संगठन का उदय हुआ। इस श्रमिक आंदोलन की बुनियाद पर ही बाद के दिनों में छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा का गठन हुआ जिसका नेता थे शंकर गुहा नियोगी। कामरेड श्रीकांत मजदूर आंदोलनों में बराबर भाग लेते रहे। स्वयं एक मजदूर के बेटे होने के नाते वह मजदूरों की समस्याओं और उनके दुखदर्द से न केवल परिचित थे, बल्कि उनके हल के बारे में हमेशा सोचा करते थे। छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा के नेतृत्व में जारी आंदोलन से वह जितना प्रभावित थे, उतना ही वह उस आंदोलन के राजनीतिक और सैद्धांतिक पक्ष से असहमत थे। वह एक सही वैचारिक व सैद्धांतिक दृष्टिकोण की तलाश में थे।

सही क्रांतिकारी दिशा की तलाश में...

दल्ली में प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने भिलाई से आईटीआई की ट्रेनिंग ली। इस दौरान दल्ली से पढ़ने आये छात्रों के अलावा भिलाई के भी कुछ छात्रों के साथ उनकी घनिष्ठता बढ़ गई। घनिष्ठता का आधार भी मजदूर आंदोलन एवं उसके सैद्धांतिक दृष्टिकोण से संबंधित चर्चा ही था। नौजवानों की यह टोली आखिर तक कामरेड श्रीकांत के साथ रही। उनमें से कुछ लोग कामरेड श्रीकांत के क्रांतिकारी सफरनामे का अलग–अलग रूप में हिस्सा बने रहे। इस दौरान सीपीआई (एमएल) (रेडफ्लैग) पार्टी से उनका संपर्क हुआ। और उन्हें एकबारगी ऐसा लगा था कि उन्हें अपनी तलाश की मंजिल मिल गई। दल्ली के आंदोलन में रेडफ्लैग का प्रवेश 1980 के दशक की शुरूआत में हुआ था। छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा के साथ जुड़कर वह मजदूरों में काम करने लगी थी। मार्क्सवादी–लेनिनवादी विचारधारा की दुहाई देते हुए यह पार्टी मजदूरों में अपनी पैठ बना रही थी। ऐसे समय में श्रीकांत का भी उस पार्टी की ओर आकर्षित होना सहज व स्वाभाविक था। कामरेड श्रीकांत ही नहीं, उनकी पूरी टोली रेडफ्लैग में शामिल हो गई थी।

रेडफ्लैग में रहते हुए ही श्रीकांत का मार्क्सवादी राजनीति से परिचय हुआ था। छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा के राजनीतिक व सैद्धांतिक दृष्टिकोण, जोकि उदारपंथी बुर्जुआई दृष्टिकोण था, से अलग होकर रेडफ्लैग के नेतृत्व में नवजनवादी क्रांति के लक्ष्य को पूरा करने नये सिरे से काम शुरू किया था। ग्रामीण इलाकों में 'जोतनेवालों को जमीन' के नारे से वर्ग संघर्ष के आधार पर कृषि क्रांति को संचालित करने सबसे पहले वर्ग विश्लेषण का निर्णय लेकर श्रीकांत ने बिलासपुर जिले में कदम रखा। जिले के एक ग्रामीण इलाके को

अपना कार्यक्षेत्र चुनकर अपने एक–दो और साथियों के साथ काम शुरू किया। इसी क्रम में 1981–82 में वह उस पार्टी के पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन गये थे। छत्तीसगढ़ के गांवों में मालगुजारी प्रथा मजबूत थी। सैकड़ों एकड़ के मालिक मालगुजारों का गांवों में दबदबा था। ऐसे एक गांव के मालगुजार के खिलाफ गरीब व भूमिहीन किसानों को संगठित करके कामरेड श्रीकांत ने किसान संघर्ष छेड़ दिया था। इस संघर्ष के दौरान 1985 में उस मालगुजार पर कार्रवाई करने का निर्णय हुआ था जिसमें एक कार्यकर्ता की गिरफ्तारी हुई थी। रेडफ्लैग के नेतृत्व ने इस बहाने वहां के संघर्ष को आगे ले जाने को तैयार नहीं हुई थी। इसके साथ ही, कामरेड श्रीकांत का पार्टी नेतृत्व के साथ मतभेद शुरू हुआ था। वर्ग संघर्ष को तेज करने हेतु राजनीतिक, सैद्धांतिक और व्यावहारिक कामकाज को आगे बढ़ाने की श्रीकांत की बातों का किसी न किसी बहाने पार्टी नेतृत्व विरोध करता रहा था। पार्टी के साथ श्रीकांत का वैचारिक संघर्ष तेज होने लगा था।

रेडफ्लैग की गलत लाइन के खिलाफ वैचारिक संघर्ष

रेडफ्लैग का कामकाज दल्ली, दुर्ग, भिलाई, रायपुर और बिलासपुर जिलों में फैल रहा था। शोषक–शासक वर्गों के खिलाफ चार उत्पीड़ित वर्गों – मजदूरों, किसानों, छोटे व देशी पूंजीपतियों – को संगठित करके वर्ग संघर्ष को तेज करने की क्रांतिकारी राजनीति छात्र–युवा, किसान–मजदूरों को तेजी से आकर्षित कर रही थी। इसी के तहत दल्ली में छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा का सांस्कृतिक संगठन 'नवा अंजोर' के कुछ साथी कामरेड श्रीकांत की राजनीतिक पहल से रेडफ्लैग से जुड़ गये थे। रायपुर के बिजली कर्मचारियों और अभनपुर के नवभारत एक्सप्लोजिव कारखाने के मजदूरों में पार्टी की पैठ बढ़ी थी। दल्ली के युवाओं के अलावा राजनांदगांव जिले के ग्रामीण युवा व किसान क्रांतिकारी राजनीति के दायरे में आ गये थे। इन तमाम गतिविधियों में कामरेड श्रीकांत की महत्वपूर्ण भूमिका थी।एक पेशेवर क्रांतिकारी से अपना क्रांतिकारी सफर शुरू करने वाले कामरेड श्रीकांत सीढ़ी दर सीढ़ी विकसित होते हुए 1991–92 तक रेडफ्लैग के राज्य कमेटी सदस्य बन गये थे।

पार्टी में बढ़ते ओहदे के साथ ही पार्टी नेतृत्व के साथ उनकी बहस भी तीखी होती आई। व्यवहार में सशस्त्र कृषि क्रांतिकारी संघर्ष को तेज करने को लेकर पार्टी नेतृत्व की उदासीनता से कामरेड श्रीकांत खफा थे। क्रांतिकारी लफ्फाजी के सहारे वर्ग संघर्ष के लिए संगठित जनता को ज्यादा दिन टिकाये नहीं रखा जा सकता, इस बात से वाकिफ कामरेड श्रीकांत रेडफ्लैग के नेतृत्व की सशस्त्र संघर्ष से विमुखता को भांपकर छटपटा ने लगे थे। वह 1984–85

से ही दंडकारण्य के क्रांतिकारी आंदोलन की खबरें सुन रहे थे और 1985 में स्वयं दल्ली में कामरेड गदर के नेतृत्व में प्रदर्शित आन्ध्रप्रदेश जन नाट्य मंडली के क्रांतिकारी सांस्कृतिक कार्यक्रम को देख चुके थे। मुख्यत: आन्ध्रप्रदेश के किसान सशस्त्र संघर्ष के पक्ष में एवं उसके ऊपर जारी सरकारी दमन के खिलाफ प्रचार करने के लक्ष्य से यह कार्यक्रम आयोजित किया गया था। 1990 में आन्ध्रप्रदेश जन नाट्य मण्डली के नेतृत्व में एक सांस्कृतिक टोली सरकारी दमन के खिलाफ अखिल भारतीय दौरे पर निकली थी। भिलाई व रायपुर में जन नाट्य मंडली के सांस्कृतिक कार्यक्रम एक–दो ही हुये थे कि तत्कालीन मध्यप्रदेश सरकार ने जन नाट्य मंडली को मध्यप्रदेश से एक्सटेर्मिनेट, यानी बहिष्कार करते हुए आदेश निकाला था और टीम को वापस भेज दिया था। कामरेड श्रीकांत ने इस दौरान उस टीम के साथ मिलकर कार्यक्रम को व्यापक बनाने की कोशिश की थी।

हालांकि कामरेड श्रीकांत का पार्टी से परिचय 1980 के दशक के उत्तरार्द्ध में हुआ था। उस समय वह अपनी पार्टी में आंतरिक संघर्ष चला रहे थे। रेडफ्लैग के नेतृत्व ने इस बात का हवाला देते हुए कि तत्कालीन पीपुल्सवार पार्टी के साथ केन्द्रीय स्तर पर विलय की वार्ता चल रही है, कामरेड श्रीकांत को इंतजार करने कहा गया था। कामरेड श्रीकांत को यह स्पष्ट हो चुका था कि रेडफ्लैग का नेतृत्व हथियारबंद लड़ाई को संचालित करने तैयार नहीं है। उन्होंने ठान ले रखी थी कि उन्हें उस समय की पीपुल्सवार पार्टी में शामिल होकर हथियारबंद लड़ाई का हिस्सा बनना है। लेकिन विलय की वार्ता की बात सुनकर उन्होंने और इंतजार करने का निर्णय लिया। नेतृत्व के साथ उनकी बहस के चलते पार्टी के कई कार्यकर्ताओं में पीपुल्सवार की राजनीति एवं उसके द्वारा संचालित जनयुद्ध के प्रति लगाव बढ़ गया था। इस दौरान वह पीपुल्सवार पार्टी के नियमित संपर्क में थे, जोकि रायपुर और दुर्ग जिलों में कार्यरत थी। जैसे ही वह समझ गये कि दरअसल रेडफ्लैग का नेतृत्व वार्ता के बहाने उन्हें व अन्यों को पीपुल्सवार पार्टी से जुड़ने से रोकना चाह रहा है, वह पार्टी के साथ संपर्क तोड़कर पीपुल्सवार पार्टी के साथ अपने स्तर पर बातचीत शुरू की। राजनीतिक व सैद्धांतिक विषयों पर पार्टी की समझदारी से अवगत होने के बाद वह तब तक के अपने कामकाज व रेडफ्लैग के साथ जुड़े रहने को लेकर अपनी गलत सैद्धांतिक समझदारी से नाता तोड़ते हुए लिखित में आत्मालोचना पेश की। और 1993 में वह पुरानी भाकपा (माले) (पीपुल्सवार) पार्टी का हिस्सा बने थे।

क्रांतिकारी पार्टी का हिस्सा बनकर...

पीपुल्सवार पार्टी में वह अकेले नहीं आये थे, बल्कि पेशेवर क्रांतिकारी से

लेकर अंशकालीन पार्टी सदस्यों व समर्थकों की एक अच्छी–खासी टोली को लेकर आये थे। इसके आधार पर पीपुल्सवार का कामकाज जोकि पहले भिलाई, रायपुर शहरों तक सीमित था, राजनांदगांव के ग्रामीण इलाकों में फैल गया था। दल्ली एवं आसपास के गांवों के युवाओं को बड़े पैमाने पर गोलबंद करने में कामरेड श्रीकांत का सम्पर्क व मार्गदर्शन अहम था। जून 1994 में उन्होंने दंडकारण्य में प्रवेश किया था ताकि वहां के क्रांतिकारी आंदोलन से प्रत्यक्ष रूप से परिचित हो सके व अनुभव हासिल किया जा सके।

कामरेड श्रीकांत हंसमुख स्वभाव के थे। उनके संपर्क में बंगाली, तेलुगु, केरलियन और छत्तीसगढ़िया लोग बराबरी से थे। उन्होंने अपने हर संपर्क को पार्टी संबंध में बदलने व पार्टी कामकाज के लिए ही इस्तेमाल करने की कोशिश की। व्यक्तिगत संपर्क हो या फिर रिश्तेदार–नातेदार, तमाम संपर्कों को पार्टी के लिए किसी न किसी रूप में इस्तेमाल करने की कोशिश करते थे। उनकी इसी खूबी के चलते दुर्ग, रायपुर व राजनांदगांव जिलों के कई गांवों में तथा दल्ली, भिलाई, रायपुर, बिलासपुर आदि शहरों में कई लोग पार्टी समर्थक बने थे और वो विभिन्न तरीकों में पार्टी की मदद करने लगे थे।

दिसंबर 1994 में शहरी व मैदानी इलाके के कामकाज की समीक्षा, नेतृत्व का संगठितीकरण, नये कर्तव्यों को तय करने के लिए प्लीनम का आयोजन हुआ था। प्लीनम ने एक जिला स्तर की कमेटी को चुना था जिसमें कामरेड श्रीकांत भी एक थे। हालांकि वह 1991–92 तक ही रेडफ्लैग की राज्य कमेटी के सदस्य थे, लेकिन जिला स्तर की कमेटी में चुने जाने को लेकर उनके अंदर जरा सी भी नाराजगी नहीं थी। ''इस पार्टी में शामिल होने के लिए मैंने बरसों इंतजार किया था। क्रांतिकारी व्यवहार से जुड़ने का मेरा सपना अब पूरा हुआ। एक सही क्रांतिकारी पार्टी का हिस्सा बनकर जनता की सेवा करने का मौका मिल गया, यही मेरे लिए बहुत बड़ी बात है। पद के बारे में तो मैंने कभी सोचा तक नहीं'' – पार्टी में शामिल होते समय उनके द्वारा कही गई ये बातें हमारे लिए हमेशा अनुसरणीय हैं। आरडीआर, यानी रायपुर–दुर्ग–राजनांदगांव कमेटी का सदस्य बनकर कामरेड श्रीकांत ने 1995–96 के दौरान दल्ली व उसके आसपास के इलाकों में बेरोजगारों का एक बड़ा आंदोलन खड़ा किया था।

आरडीआर कमेटी के गठन के बाद, 1995 में आयोजित दंडकारण्य स्पेशल जोन के दूसरे अधिवेशन में प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने के लिए उस कमेटी को दो सीटें मिली थीं। कमेटी सचिव के अलावा श्रीकांत को मौका देते हुए कमेटी ने उन्हें एकमत से प्रतिनिधि के रूप में भेजा।

सितम्बर 1996 में आरडीआर कमेटी का वरिष्ठ सदस्य व भिलाई में पार्टी

का पहला आर्गनाइजर रमेश राजनीतिक रूप से पतित हुआ था, जिसने दुश्मन के सामने घुटने टेक दिए थे। उस स्थिति में कामरेड श्रीकांत हिम्मत के साथ काम करते हुए कतारों को पार्टी के साथ जोड़े रखा। 1997 में कमेटी सचिव व एसजडसी सदस्य मधुकर ने जब आत्मसमर्पण किया तब भी पूरी कमेटी के साथ मिलकर कामरेड श्रीकांत ने स्थिति का सामना किया और एक सीनियर नेता के पतित होने का गलत प्रभाव कैडरों पर पड़ने नहीं दिया। और कैडरों को सही शिक्षा दी कि चंद नेताओं के पतन से विचलित होने की जरूरत नहीं है, बल्कि हमें क्रांतिकारी सिद्धांत व जनता पर अटूट विश्वास रखते हुए आगे बढ़ना है।

कामरेड श्रीकांत को देखते ही लोग खुश हो जाते थे। हर उम्र के लोगों के साथ उनका उतनी ही आत्मीयता के साथ मेल मिलाप होता था। पारिवारिक पृष्ठभूमि गैर छत्तीसगढ़िया होने के बावजूद वह ठेठ छत्तीसगढ़ी भाषा बोलते थे। दल्ली की सड़कों पर उनका बचपन छत्तीसगढ़िया यार–दोस्तों के साथ ही बीता था। क्रांतिकारी सफर शुरू करने के बाद उन्होंने छत्तीसगढ़ को ही अपना कार्यक्षेत्र चुना था और ग्रामीण इलाकों में काम करने के चलते स्थानीय भाषा पर मजबूत पकड़ हासिल हुई थी। कामरेड श्रीकांत नरम स्वभाव वाले इन्सान थे। जनता, कैडरों और पार्टी नेतृत्व के साथ उनका मिलनसार व कामरेडाना बरताव रहता था। लेकिन वर्ग दुश्मनों की जहां तक बात आती है, तो वह वर्गीय नफरत से सराबोर हो जाया करते थे। बेहद कठोर हो जाते थे। वह जुझारू स्वभाव के भी थे। दल्ली–भिलाई में गुण्डों पर कार्रवाई करने के मामले में, बिलासपुर में मालगुजार पर कार्रवाई की घटना में एवं पार्टी (रेडफ्लैग) की जरूरतों के लिए किये गये बैंक हमले की कार्रवाई में उन्होंने दृढ़ संकल्प के साथ भाग लिया।

क्रांतिकारी संस्कृति व साहित्य के वाहक के रूप में...

कामरेड श्रीकांत एक अच्छे वक्ता व संगठक ही नहीं, बल्कि एक बढ़िया सांस्कृतिक कार्यकर्ता भी थे। वह गीत गाते थे। नुक्कड़ खेलते थे। नुक्कड़ के लिए स्क्रिप्ट बनाते भी थे। यानी वह एक साथ लेखक, कलाकार, निर्देशक और गायक भी थे। साथ ही, वह अच्छे आलोचक भी थे। नाटक के क्षेत्र में वह बादल सरकार के प्रशंसक थे और उनसे खासे प्रभावित भी थे। प्रेमचंद के 'कफन' पर आधारित बादल सरकार के नाटक का कामरेड श्रीकांत ने कितनी बार उल्लेख किया होगा, गिनती नहीं। कामरेड श्रीकांत ने 'भारत 1994' नामक एक स्किट तैयार किया था, जिसे उन्होंने साल बदलकर कई प्लीनमों, अधिवेशनों और पार्टी कांग्रेस के दौरान प्रदर्शित करवाया था। 1994 के बाद से यह नाटक 2004 तक हर साल प्रदर्शित किया जाता रहा। इसमें महंगाई, कालाबाजारी और

भूखमरी विषय वस्तु के रूप में थीं। वह नाटक आज भी इतना प्रासंगिक है कि 'भारत 2013' के नाम से बिना किसी बदलाव के, यानी उन्हीं पात्रों, दृश्यों व वाद–संवाद के साथ प्रदर्शित किया जा सकता है।

राजनांदगांव जिला समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का धनी है। अधिकांश गांवों में नाट्य संस्थाएं और लोककला की टोलियां मौजूद हैं। उनके बीच काम करते हुए क्रांतिकारी सांस्कृतिक आंदोलन का निर्माण करने में व क्रांतिकारी सांस्कृतिक संगठन का गठन करने में कामरेड श्रीकांत ने अपनी जान लगा दी, जोकि बाद में अखिल भारतीय क्रांतिकारी सांस्कृतिक संगठन का हिस्सा बना था। कामरेड श्रीकांत के मार्गदर्शन में इस संगठन के द्वारा प्रकाशित व प्रसारित गीत संकलन राजनांदगांव जिले में ही नहीं, बल्कि पूरे दंडकारण्य में आज भी लोकप्रिय बना हुआ है। वह सांस्कृतिक संगठन राजनांदगांव जिले में काफी लोकप्रिय हुआ था। कल्चरल फेस्टिवल – कई सांस्कृतिक संगठनों का मेल मिलाप – में इस संगठन ने कई प्रस्तुतियां दी थीं।

गढ़चिरोली आंदोलन का भागीदार बनकर...

आरडीआर कमेटी के दो सदस्यों के आत्मसमर्पण, कुछ कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी, दुश्मन का बढ़ता दमन, खुफिया तंत्र की बढ़ती निगरानी, हमारी आत्मगत शक्तियों की कमजोरी आदि के मद्देनजर डीके एसजेडसी ने 1997 में आयोजित प्लीनम में आरडीआर कमेटी को रद्द किया एवं कमेटी सदस्यों का अलग–अलग क्षेत्रों में तबादला किया। इस तरह कामरेड श्रीकांत 23 जनवरी 1998 में दंडकारण्य की जनता के बीच प्रत्यक्ष रूप से काम करने आ गये थे।

1998 में कामरेड श्रीकांत ने गढ़चिरोली डिवीजनल कमेटी के सदस्य के रूप में जिम्मेदारी संभाली। तबसे लेकर आखिर तक उनका क्रांतिकारी जीवन पूरा गढ़चिरोली में ही गुजरा। सबसे पहले उन्होंने टिप्रागढ़ इलाके में काम किया। उस समय शहीद कामरेड विक्रम के साथ रहते हुए स्थानीय परिस्थितियों और सांगठनिक तौर–तरीकों को समझने–बूझने की कोशिश की। अगस्त 1999 में जब कामरेड विक्रम एक लड़ाई में शहीद हो गए तो उन्होंने स्वतंत्र रूप से जिम्मेदारी निभाई। अपने लिए अनजान भाषा व अलग संस्कृति होने के बावजूद उन्होंने जल्द ही स्थानीय जनता के साथ आत्मीय रिश्ता बना लिया। सभी के साथ घुलमिल जाने के अपने सहज स्वभाव के चलते उन्होंने जल्द ही जनता और कैडरों सभी का विश्वास जीत लिया।

गढ़चिरोली जिले में शत्रु दमन शुरू से ज्यादा रहा। गढ़चिरोली महाराष्ट्र का इकलौता जिला है जहां पर गुरिल्ला युद्ध उच्च स्तर पर विकसित हुआ है। इसलिए शासक वर्गों ने शुरू से ही इस जिले में क्रांतिकारी आंदोलन को

कुचलने पर पूरा जोर लगाया। सैकड़ों करोड़ रुपए से विशेष कार्ययोजना, सी–60 के नाम से विशेष कमाण्डो बल का गठन आदि के जरिए दमन और सुधारों को एक साथ चलाया जाता रहा। लोगों को फर्जी मुठभेड़ों में मार डालना, झूठे केस लगाकर सैकड़ों आदिवासियों को जेलों में बंद करना, अंधे कानून के सहारे कई लोगों को आजीवन कारावास की सजाएं सुनाना आदि आम हो गया। इन विपरीत परिस्थितियों में भी कामरेड श्रीकांत ने जनता के बीच हिम्मत के साथ काम किया। विभिन्न समस्याओं को लेकर तथा सरकारी दमन के विरोध में जनता को गोलबंद कर जन आंदोलनों और जन प्रतिरोध को खड़ा करने में कामरेड श्रीकांत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तेंदुपत्ता व बांस कटाई की मजदूरी बढ़ाने के लिए जनता को संघर्षों में उतारने में तथा अलग–अलग मौकों पर अकाल, सरकारी दमन आदि मुद्दों को लेकर आयोजित रैलियों में हजारों जनता को गोलबंद कर उन्हें सफल बनाने में कामरेड श्रीकांत की प्रमुख भूमिका रही। जनता को संघर्ष में उतारने के लिए प्रचार कार्यों में भी वह सक्रिय भूमिका निभाते थे। विभिन्न नारों के साथ बैनर व पोस्टर तैयार करवाना तथा पर्चा लिखना आदि कामों में कामरेड श्रीकांत मुख्य भूमिका निभाते थे। विभिन्न प्रगतिशील व जनवादी जन संगठनों के साथ तालमेल बनाकर संयुक्त मोर्चे के तहत विभिन्न कार्यक्रम संचालित करने में उनका योगदान रहा। साथ ही, उन्होंने महाराष्ट्र की राजनीति पर अपनी समझदारी बढ़ा ली। दुश्मन की योजनाओं और रणनीतियों का वह जब का तब विश्लेषण कर लेते थे।

भीषण शत्रु दमन के बीच भी खासकर टिप्रागढ़ इलाके में आंदोलन को संगठित करने में तथा वहां से नौजवानों को बड़ी संख्या में पीएलजीए में भर्ती करवाने में कामरेड श्रीकांत का योगदान रहा। स्थानीय एसी का मार्गदर्शन देने में तथा कामरेडों को राजनीतिक रूप से विकसित करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस तरह टिप्रागढ़ इलाके में, पूरे उत्तर गढ़चिरोली में कामरेड श्रीकांत एक महत्वपूर्ण जन नेता के रूप में उभरे थे।

साथ ही, उससे सटे हुए मैदानी इलाकों, जहां उन्होंने पहले काम किया था, में भी उनका संपर्क कायम रहा। वहां के सांस्कृतिक संगठन को तथा अन्य साथियों को मार्गदर्शन देते रहे। आधार इलाके के लक्ष्य से दण्डकारण्य में जनयुद्ध को आगे बढ़ाने के लिए मैदानी व शहरी इलाकों से क्या–क्या योगदान जरूरी है, इस पर कामरेड श्रीकांत को स्पष्ट समझदारी थी। इसी समझदारी के साथ वह मैदानी इलाकों के साथियों और समर्थकों को दण्डकारण्य संघर्ष भूमि की रिपोर्टें बताते हुए उनका उत्साह बढ़ाते थे और विभिन्न रूपों में जनयुद्ध की सेवा करने तथा जनसेना में भर्ती के लिए प्रोत्साहित करते थे।

वर्ष 2000 के बाद उन्हें गढ़चिरोली डिवीजनल कमेटी के सचिवालय सदस्य के रूप में चुन लिया गया। 2003 में आयोजित दण्डकारण्य स्पेशल जोन के तीसरे अधिवेशन के पहले प्लीनम में उन्हें एसजेडसी के वैकल्पिक सदस्य के रूप में चुन लिया गया। 2005 में उन्हें एसजेडसी सदस्य के रूप में सहयोजित किया गया।

मानपुर क्षेत्र में क्रांतिकारी संघर्ष के विस्तार में...

वर्ष 2005 के आखिर में एसजेडसी ने दक्षिणी राजनांदगांव के मानपुर क्षेत्र में आंदोलन का विस्तार करने का फैसला लिया। इस कार्यभार को पूरा करने के लिए कामरेड श्रीकांत ने अपने हिस्से का योगदान दिया। चूंकि इस इलाके से वह पहले से परिचित थे और जनता के साथ उनका शुरू से सम्पर्क रहा, इसलिए मानपुर इलाके में कदम रखने वाले पहले गुरिल्ला दस्ते के साथ कामरेड श्रीकांत भी गए थे। कुछ समय तक वह उस दल के साथ रहे। गांव–गांव घूमते हुए जनता के साथ मिलना, बात करना, परिचय बनाना, क्रांतिकारी राजनीति का प्रचार करना आदि मामलों में उनकी भूमिका अहम थी। गांवों में जब वह ठेठ छत्तीसगढ़ी भाषा में भाषण देते थे, तो लोग मंत्रमुग्ध होकर सुना करते थे। उन्होंने वहां पर इस कदर अपनी छाप छोड़ दी कि मानपुर क्षेत्र की जनता उन्हें आज भी नहीं भूलती। मानपुर डिवीजन का परस्पेक्टिव तैयार करने में तथा वहां पर आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए डिवीजनल कमेटी को संगठित करने में कामरेड श्रीकांत की भूमिका रही। उनका सपना था कि वह जिस दल्ली कस्बे से पल–बढ़कर क्रांतिकारी संघर्ष में आए थे, उसमें और उसके इर्द–गिर्द छत्तीसगढ़ के तमाम मैदानी क्षेत्रों में क्रांतिकारी संघर्ष का परचम लहराया जाए।

उस समय उन्हें थोड़े समय के लिए मैदानी इलाके में सांगठनिक काम की जिम्मेदारी दी गई थी। उन्होंने दुर्ग व राजनांदगांव जिलों में दल्ली, मानपुर, मोहला, चौकी आदि मैदानी इलाकों में काम किया। वहां पर बेरोजगार युवाओं को गोलबंद करते हुए पल्लामाड़ क्षेत्र में किए गए एक जुझारू जन संघर्ष का उन्होंने मार्गदर्शन किया। वहां पर रायपुर एल्लायज नामक कम्पनी के द्वारा बड़ी–बड़ी मशीनों के साथ खदान शुरू की गई थी जिसके खिलाफ दल्ली और उसके आसपास के युवाओं ने संघर्ष का बिगुल बजाया। उनकी मांग थी मशीनीकरण बंद करना और ज्यादा लोगों को काम देना। लेकिन मेनेजमेंट ने इसे ठुकरा दिया। बाद में विभिन्न जन संगठनों के संयुक्त मोर्चे के नेतृत्व में बेरोजगार युवाओं ने 'आर–पार की लड़ाई' के नाम से खदान स्थल पर जाकर एक जुझारू आंदोलन चलाया। मुख्य रूप से मैदानी व अर्द्धशहरी इलाके के

युवाओं द्वारा संचालित इस आंदोलन के लिए जंगल के अंदर से आदिवासी किसानों का समर्थन जुटाने में कामरेड श्रीकांत की अहम भूमिका रही। राजनांदगांव के मानपुर–मोहला तथा गढ़चिरोली के टिप्रागढ़ व चादगांव के इलाकों से सैकड़ों आदिवासियों ने पल्लामाड़ी संघर्ष के प्रति भाईचारा प्रकट करते हुए उसमें भाग लिया। बाद में इस संघर्ष ने कई मोड़ लिए और आखिर में स्थानीय जनता ने 'जल–जंगल–जमीन पर अधिकार' के मुद्दे को लेकर उस खदान को बंद करने की मांग से आंदोलन शुरू किया। इस मांग पर व्यापक जनता को संघर्ष में उतारा गया और अंततः जनता को इसमें कामयाबी मिली। इस पूरे क्रम में एसजेडसी सदस्य के तौर पर कामरेड श्रीकांत का प्रत्यक्ष और परोक्ष मार्गदर्शन रहा।

प्रचार व प्रतिरोध के जरिए सलवा जुडुम का मुकाबला

कामरेड श्रीकांत प्रचार कार्यों में हमेशा सक्रिय रहते थे। खुद एक सांस्कृतिक कर्मी होने के नाते वह हमेशा रचनात्मक ढंग से सोचा करते थे। 2005 में छत्तीसगढ़ की रमन सरकार ने केन्द्र की यूपीए सरकार के सक्रिय समर्थन व सहयोग से सलवा जुडुम के नाम पर बर्बरतम दमन अभियान शुरू किया था और इसके तहत इंद्रावती, पश्चिम और दक्षिण बस्तर के इलाकों में आतंक का तांडव मचाया था। उस दौरान सरकारी सशस्त्र बलों ने गांवों को जलाना, सम्पत्तियों को लूटना, क्रूर हत्याएं, महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार आदि दमनकारी करतूतों को जोरों पर चलाया था। लेकिन जंगलों के अंदर जो हो रहा था उसके बारे में बाहरी दुनिया को जानकारी न के बराबर मिल रही थी। मीडिया को सरकार ने पूरी तरह काबू कर रखा था। उस मौके पर एसजेडसी ने एक वीडियो फिल्म बनाकर यहां की सच्चाइयों से देश–दुनिया को अवगत करवाने का निर्णय लिया। 'सलवा जुडूम नहीं, सरकारी जुल्म' के नाम से दण्डकारण्य प्रचार कमेटी द्वारा बनाई गई उस फिल्म के निर्माण में पटकथा–लेखन से लेकर कई पहलुओं में कामरेड श्रीकांत की महत्वपूर्ण भागीदारी रही। उस फिल्म में उन्होंने अपनी आवाज भी दी। इसी फिल्म को जब छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में विधायकों को भेजा गया था उस पर भारी बवाल मचा था। कुल मिलाकर कहा जाए तो सलवा जुडुम के जुल्मों का जनता के सामने व्यापक रूप से पर्दाफाश करने में यह फिल्म सफल रही।

साथ ही, सलवा जुडुम को बंद करने की मांग से शहरी इलाके में एक व्यापक जन गोलबंदी करने का भी निर्णय लिया गया। विभिन्न जनवादी संगठनों के साथ इस पर चर्चा करके राजधानी रायपुर समेत विभिन्न शहरों में सभा, सेमिनार व प्रदर्शन आयोजित किए गए थे। इसमें भी कामरेड श्रीकांत का

महत्वपूर्ण योगदान रहा। सलवा जुडुम के तहत जब दुश्मन ने नगा व मिजो बटालियनों को तैनात कर गांवों पर अंधाधुंध हमले छेड़ दिए थे तब नेशनल पार्क इलाके में गढ़चिरोली से पीएलजीए बलों को भेजा गया था ताकि प्रतिरोध में डटी बस्तरिया जनता की सहायता की जा सके। इसमें कामरेड श्रीकांत की भूमिका थी। साथ ही, सलवा जुडुम के पीड़ितों को सहायता पहुंचाने के लिए कपड़े, दवाइयां और पैसे इकट्ठे करने में भी उनका योगदान रहा। इस तरह, सलवा जुडुम को पराजित करने में कामरेड श्रीकांत ने अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाई।

फिर से गढ़चिरोली आंदोलन का प्रत्यक्ष नेतृत्व

सितम्बर 2006 में दुश्मन ने गढ़चिरोली संघर्ष के एक और महत्वपूर्ण नेता व एसजेडसी सदस्य कामरेड विकास की फर्जी मुठभेड़ में हत्या कर दी। एक महत्वपूर्ण काम पर जब वह कांकेर जिले के भानुप्रतापपुर के आसपास से गुजर रहे थे तब पुलिस वालों ने उन्हें पकड़कर क्रूर यातनाएं देने के बाद गोली मार दी। यह पूरी पार्टी के लिए दुख की घड़ी थी। तब तक कामरेड विकास एसजेडसी सदस्य के रूप में उत्तर गढ़चिरोली डिवीजन का नेतृत्व कर रहे थे। उस समय आंदोलन के विस्तार को देखते हुए गढ़चिरोली डिवीजन को दो डिवीजनों – उत्तर व दक्षिण में बांटा जा चुका था। ऐसी स्थिति में कामरेड श्रीकांत को फिर से गढ़चिरोली जिले में काम संभालना पड़ा।

सितम्बर 2006 में आयोजित डीके के चौथे अधिवेशन में उन्हें फिर से स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया। 2007 में आयोजित पार्टी की एकता कांग्रेस – 9वीं कांग्रेस में उन्होंने दण्डकारण्य से प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। कांग्रेस में हुई सैद्धांतिक व राजनीतिक बहसों में उन्होंने सक्रिय भागीदारी ली। 2007 में उन्हें पश्चिम सबजोनल ब्यूरो के प्रभारी के रूप में चुन लिया गया। 2009 में जब सबजोनल ब्यूरो की जगह पर रीजनल कमेटियों का गठन हुआ, तब उन्हें पश्चिम रीजनल कमेटी के सचिव की जिम्मेदारी दी गई। और उसी समय उन्हें एसजेडसी सचिवालय के सदस्य की जिम्मेदारी भी सौम्पी गई। इस तरह वह दण्डकारण्य आंदोलन के एक महत्वपूर्ण नेता के रूप में उभरे थे।

गढ़चिरोली जिले में जब सी–60 कमाण्डों का आतंक बढ़ने लगा और सरकारी दमन के चलते जनता बुरी तरह परेशान थी तब दुश्मन के बलों का सफाया करने के लक्ष्य से विशेष रूप से कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान चलाए गए थे। इन अभियानों को सफल बनाने में वह जी–जान से जुट गए थे। खासकर 2008–09 में पीएलजीए ने कई फौजी कार्रवाइयों को सफल बनाया।

कोरेपल्ली, मरकानार, मुगिनेर, हत्थिगोट्टा, लाहेरी आदि ऐम्बुशों में पीएलजीए ने सी–60 कमाण्डो और अन्य पुलिस बलों का बड़ी संख्या में सफाया कर, दर्जनों आधुनिक हथियारों को जब्त कर दुश्मन के घमण्ड पर करारी चोट की। इन तमाम सफलताओं के पीछे कामरेड श्रीकांत की महत्वपूर्ण भूमिका रही। वह एक प्रेरणादायक नेता थे। जनयुद्ध के मोर्चे में पीएलजीए और जनता द्वारा हासिल हर छोटी सफलता पर वह अत्यंत खुशी प्रकट करते थे और उनका अभिनंदन करते थे। विफलताओं में भी उनका हौसला बनाए रखने और उससे सही शिक्षा लेने को प्रोत्साहित करने में कोई कसर नहीं छोड़ते थे।

2008 में पूरी पार्टी में भूल सुधार अभियान चलाया गया ताकि पार्टी, पीएलजीए और जन संगठनों/आरपीसी में व्याप्त गैर–सर्वहारा रुझानों को दूर किया जा सके। इस मौके पर दोनों डिवीजनल कमेटियों की संयुक्त बैठक करके जनाधार को बढ़ाने, दुश्मन का प्रतिरोध करने तथा पार्टी में मौजूद गलत रुझानों को सुधारने का एक विशेष कार्यक्रम तय किया गया। इसका कामरेड श्रीकांत ने नेतृत्व किया। बाद में उत्तर गढ़चिरोली डिवीजन सचिव व रीजनल कमेटी सदस्य दिवाकर को दुश्मन ने अपना कोवर्ट बनाकर पार्टी को नुकसान पहुंचाने का भारी षड़यंत्र रचा था। दिवाकर ने अत्यंत गोपनीय तरीके से पार्टी के अंदर विघटनकारी गतिविधियां शुरू कर दीं। उसके अंदर पनप रहे गैर–सर्वहारा रुझानों को पहचानने और उसका पर्दाफाश करने में कुछ समय लगा था। 2010 के आखिर में रीजनल स्तर पर भूल सुधार अभियान को केन्द्र बिंदु बनाकर एक विशेष प्लीनम चलाया गया जिसमें दिवाकर की गलतियों पर समूची पार्टी कतारों ने खुलकर आलोचना की। इस पूरी प्रक्रिया में कामरेड श्रीकांत ने सक्रियता के साथ भाग लेते हुए प्लीनम के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्लीनम में उन्होंने अपनी ओर से हुई गलतियों और खामियों पर ईमानदारी के साथ आत्मालोचना पेश की और प्रतिनिधियों की ओर से उठी आलोचनाओं को भी तहेदिल से स्वीकार किया। इस पूरे परिणामक्रम में रीजनल कमेटी सचिव के रूप में अपनी जिम्मेदारी स्वीकार की।

हालांकि उस समय प्लीनम इस निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सका था कि दिवाकर की विघटनकारी गतिविधियों के पीछे दुश्मन का षड़यंत्र है। बाद में इस स्पष्टता से दिवाकर के साथ पूछताछ करने और उसके आधार पर उचित कार्रवाई लेने का निर्णय लिया गया। पार्टी कतारों को इस मामले पर एकजुट रखना, पूरी पारदर्शिता बरतते हुए दिवाकर की समस्या से निपटना एक बड़ी चुनौती थी। दिवाकर का गढ़चिरोली के समूचे कैडरों और जनता में पर्दाफाश करने में तथा समूची पार्टी को एकजुट रखने में कामरेड श्रीकांत ने महत्वपूर्ण

भूमिका निभाई। पूछताछ शुरू होने से पहले ही, अपनी पोल खुल जाने की आशंका के चलते दिवाकर ने जब आत्महत्या की तो दुश्मन ने इसे हत्या बताकर दुष्प्रचारित किया ताकि जनता और पार्टी में भ्रम का वातावरण निर्मित किया जा सके। दुश्मन की इस कोशिश को भी विफल कर सच्चाई को जनता के सामने पेश करने में कामरेड श्रीकांत ने पहलकदमी दिखाई।

कामरेड श्रीकांत के उच्च आदर्शों को आत्मसात करें!

कामरेड श्रीकांत राजनीतिक व सैद्धांतिक रूप से सक्षम नेता थे। मार्क्सवाद के मूल सिद्धांतों पर उनकी पकड़ मजबूत थी। क्रांतिकारी लाइन को ऊंचा उठाते हुए संशोधनवादी व दक्षिणपंथी अवसरवादी विचारों, व्यवहार और रुझानों का उन्होंने हमेशा दृढ़ता से विरोध किया। वह जितनी तेजी से किताबों को पढ़ लेते थे उतनी ही तेजी से लेख आदि लिखते भी थे। कमेटी के प्रस्तावों, समीक्षाओं, रिपोर्टों के साथ–साथ पर्चे, आलेख वगैरह वह नियमित रूप से लिखा करते थे। 2006 से उन्हें डीके एसजेडसी का मुखपत्र 'प्रभात' के सम्पादकमण्डल सदस्य की जिम्मेदारी भी दी गई। हालांकि सांगठनिक कामों में रहते हुए नियमित रूप से लिखना आसान नहीं था, फिर भी उन्होंने कोशिश जरूर की। 'प्रभात' के लिए कुछ लेख लिखे थे। उनकी लेखन–शैली सरल व सुबोध हुआ करती थी। 2009 में एसजेडसी द्वारा प्रकाशित शहीदों की जीवनियों की किताब का उन्होंने सम्पादन किया।

1995, 2000 और 2006 में आयोजित डीके अधिवेशनों, 2003 में आयोजित प्लीनम और 2007 में सम्पन्न एकता कांग्रेस – 9वीं कांग्रेस में कामरेड श्रीकांत ने प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। इन संदर्भों में सैद्धांतिक व राजनीतिक मामलों में चर्चा करने में उनकी सक्रिय भूमिका रही। पार्टी के दस्तावेजों को समृद्ध बनाने के लिए उन्होंने अपनी ओर से कई संशोधन पेश किए थे। कामरेड श्रीकांत कमेटी की बैठकों में अपने विचारों को बेबाकी से तथा सुस्पष्ट रूप से प्रकट करते थे। किसी बिंदु पर अगर उन्हें मतभेद या आलोचना हो तो बिना किसी संकोच के कमेटी में रखते थे। बहसों और विचारों के आदान–प्रदान में वह जनवादी तौर–तरीकों से जरा भी विचलित नहीं होते थे। कमेटी कामकाज में जनवादी केन्द्रीयता को लागू करने में वह हमेशा आगे रहते थे।

कामरेड श्रीकांत की एक और खासियत यह है कि वह हमेशा जमीन से जुड़े रहे। गांवों में आम लोगों, जन संगठन सदस्यों और कार्यकर्ताओं से लेकर पार्टी के अंदर नए–पुराने हर साथी के साथ उनका रिश्ता स्नेहपूर्वक हुआ करता था। उनसे कभी कोई गलती होती या कभी किसी कामरेड पर नाहक गुस्सा करते तो बाद में उस कामरेड से क्षमा मांग लेते थे और आत्मलोचना कर

लेते थे। यही वजह है कि उनकी मृत्यु की खबर सुनकर कई कामरेडों और जनता ने आंसू बहाए। छत्तीसगढ़ के मैदानी व शहरी इलाकों से गड़चिरोली व माड़ के दूरदराज के गांवों तक वह जहां भी गए, वहां की जनता का प्यार व विश्वास उन्होंने जीत लिया। अस्वस्थता के चलते घूमने–फिरने में तकलीफ होने पर भी वह अपने साथियों को नियमित रूप से आवश्यक दिशानिर्देश दिया करते थे। अपने आखिरी दिनों में भी जब वह बिस्तर से ठीक से उठ नहीं पा रहे थे, उन्होंने गढ़चिरोली आंदोलन की समस्याओं पर एक आलेख तैयार किया। वह हमेशा आंदोलन के भविष्य के बारे में सोचा करते थे। एकता कांग्रेस द्वारा निर्देशित कार्यभारों को पूरा करने के लिए कामरेड श्रीकांत ने जनयुद्ध को तेज करने और पीएलजीए को मजबूत बनाने में अपनी तरफ से भरपूर कोशिश की। दण्डकारण्य आंदोलन को मजबूत बनाने में अपना पूरा योगदान दिया।

साथियो! अब कामरेड श्रीकांत नहीं रहे। लेकिन वह जो आदर्श स्थापित कर गए वो हमेशा हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहेंगे। आज दुश्मन ने हम पर एक बहुत बड़ा युद्ध छेड़ दिया है ताकि हमारी पार्टी व क्रांतिकारी आंदोलन का जड़ से सफाया किया जा सके जिससे कि देश के तमाम प्राकृतिक संसाधनों को साम्राज्यवाद के हवाले किया जा सके। दुश्मन हमारे नेतृत्व को खासतौर पर निशाने पर ले रहा है जिसमें उसे कुछ हद तक सफलता मिल भी रही है। राजसत्ता द्वारा चलाए जा रहे तीखे दमनचक्र के चलते ही कामरेड श्रीकांत को बेहतर इलाज नहीं मिल पाया जिससे अंततः उनकी मृत्यु हुई। आज हम एक कठिन दौर से गुजर रहे हैं। ऐसे में कामरेड श्रीकांत का इस तरह चले जाना दण्डकारण्य आंदोलन के लिए, खासकर गढ़चिरोली जिले में जारी संघर्ष के लिए बहुत बड़ा नुकसान है। इस नुकसान की भरपाई हम मजबूत जनाधार का निर्माण करते हुए, जन संघर्षों और जनयुद्ध को तेज करके ही कर सकेंगे। कामरेड श्रीकांत समेत हजारों वीर शहीदों ने जिस शोषणविहीन व समतामूलक समाज का सपना देखा उसे पूरा करने का जिम्मा हम पर है। हम हिम्मत व दृढ़ संकल्प से आगे बढ़ेंगे। कुरबानियों से नहीं डरेंगे। अंतिम जीत हमारी ही होगी।

- **कामरेड श्रीकांत अमर रहें! वीर शहीद कामरेड श्रीकांत के सपनों को साकार करें!**
- **इंकलाब जिंदाबाद! मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद जिंदाबाद!**

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

15 जनवरी 2013 **दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी**